Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Education - ISSN : 2320-0014

Continuous Issue-22 | February – March 2019

उपनिषद एवं मूल्यशिक्षाः एक विमर्श

सारांश

मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण में शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण साधन है। समाज के सदस्यों के पारस्परिक सौहार्दपूर्ण व्यवहार एवं मूल्यनिष्ठ जीवन, शिक्षा की प्रभाविता के परिचायक हैं। मूल्यों के अनुपालन से ही समाज में मानव अपने पूर्णत्व को प्राप्त कर सकता है। प्रत्येक समाज की संरचना में मानवीय मूल्यो का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। मानवीय मूल्य हैं, तो मानव की गरिमा है, उसके अस्तित्व की उपादेयता है। समाज में मानवीय मूल्यों के संचार के लिए शिक्षा अपनी अनौपचारिक, औपचारिक एवं निरौपचारिक स्वरूप में अपने विशिष्ट शिक्षण संस्थाओं जिसमें परिवार, समुदाय, धार्मिक संस्थाएं, विद्यालय एवं साहित्य के माध्यम से समाज में मूल्य शिक्षा का कार्य मानव सभ्यता के प्रारम्भ से ही करता आ रहा है। इन शैक्षणिक माध्यमों में साहित्य/ग्रंथ का अद्वितीय स्थान है। यह मानवीय मूल्यों के प्रचार प्रसार का एक सशक्त माध्यम है। साहित्य जहाँ समाज की तत्कालीन संरचना, आचार-विचार, कला एवं संस्कृति के परिचायक होते हैं वहीं मूल्यों की शिक्षा एवं प्रचार-प्रसार का भी कार्य करते हैं। वैदिक साहित्य से जुड़े सभी ग्रंथो का प्रतिपाद्य विषय मूल्य है जो विविध देवताओं की स्तुति, आत्मा एवं ब्रह्म के स्वरूप तथा संबंध को उजागर करने के दौरान प्रगट होते हैं जिनका एक मात्र उद्देश्य मानव जीवन को सुख, संतोष एवं शान्ति की शिक्षा प्रदान करना है। इन सभी ग्रंथों में उपनिषद मानवीय जीवन एवं तत्संबंधित मूल्यों को प्रतिपादित करने के अनुसंधान बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। प्रस्तुत प्रपत्र में मानवीय मूल्य के संप्रत्ययय की स्पष्टता के साथ उपनिषद साहित्य का संक्षिप्त परिचय देते हुए उपनिषदों में ध्वनित होने वाले मूल्यों एवं वर्तमान समय में उनकी शैक्षिक उपादेयता की विवेचना की गयी है।

महत्त्वपूर्ण शब्दः *उपनिषद साहित्य, मूल्य एवं शैक्षिक उपादेयता*

मूल्य मानव जीवन की आधारशिला हैं। इन मूल्यों के अनुपालन से ही समाज में मानव अपने पूर्णत्व को प्राप्त कर सकता है। प्रत्येक समाज की संरचना में मूल्यो का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। मानव जीवन का अस्तित्व मूल्यो पर टिका है। मानवीय मूल्य हैं तो मानव की गरिमा है, उसके अस्तित्व की उपादेयता है। मूल्य विहीन जीवन की कल्पना ही पशुता है। क्योंकि मानव शारीरिक रूप से तो मूल्य के बिना जीवित रह सकता हैं परन्तु ऐसे समाज में जहाँ, मूल्यो की अवहेलना की जाति है, वहां भय, क्रोध, लालच एवं हिंसा के परिणामस्वरूप मानव का गरिमामय जीवन जी पाना ही दुष्कर हो जाता है।

समाज में मूल्यों के प्रचार-प्रसार के लिए शिक्षा अपनी अनौपचारिक, औपचारिक एवं निरौपचारिक स्वरूप की अपनी विशिष्ट संस्थाओं जिसमें परिवार, समुदाय, धार्मिक संस्थाएं, शैक्षिक संस्थान एवं साहित्य सामिल हैं, के माध्यम से समाज में मूल्य शिक्षा का कार्य मानव सभ्यता के प्रारम्भ से ही करती आ रही है। इन शैक्षणिक माध्यमों में साहित्य/ग्रंथ का अद्वितीय स्थान है। यह मानवीय मूल्यों के प्रचार प्रसार का एक सशक्त माध्यम हैं। साहित्य जहाँ समाज की तत्कालीन संरचना, आचार-विचार, कला एवं संस्कृति के परिचायक होते हैं वहीं मूल्यों की शिक्षा एवं प्रचार-प्रसार का भी कार्य करते हैं। साहित्य की रचना का उद्देश्य मात्र वार्ता कथन अथवा भाषायी चमत्कार उत्पन्न करना नहीं होता, इसका वास्तविक उद्देश्य तो मानव

व्यवहार का नियमन, नैतिक विचारों का प्रचार-प्रसार, मूल्यों की महिमा का वर्णन एवं मानवीय जीवन को सुखमय बनाना होता है।

'काव्यं यशसे अर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।

सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥(का.प्र. 1).'

उपरोक्त श्लोक के माध्यय से मम्मट ने काव्यप्रकाश में; प्रतिष्ठा की प्राप्ति, अर्थिक समृद्धि तथा सबसे महत्वपूर्ण अकल्याणकारी विचारों से रक्षण तथा कल्याण की स्थापना को साहित्य का प्रमुख कार्य मान है।

भारत की साहित्यिक यात्रा का श्रीगणेश वैदिक युग से ही माना जाता है। विश्व के प्राचीनतम् ग्रंथों में वेदों का स्थान आदरणीय है। भारत के साहित्य खासकर संस्कृत साहित्य, जिनकी रचना ही मानवीय मूल्यों के प्रचार-प्रसार के लिए हुई है, को दो भागों में वर्गीकृत करके देखा जा सकता है। जिसमें एक है; वैदिक साहित्य एवं दूसरा है; लौकिक साहित्य| वैदिक साहित्य में वेद, ब्राहमण, अरण्यक, उपनिषद, एवं वेदांग का समावेश होता। पाणीनि व्याकरण के पश्चात अर्थात लगभग 500 ई.पू. के बाद लिखे गये ग्रंथो का समावेश लौकिक साहित्य में होता है जिसमें पुराण, महाकाव्य, खंडकाव्य, नाटक इत्यादि हैं। इन दोनो ही साहित्य प्रकारों की समानता उनके मूल्य स्थापन के संबंध देख सकते हैं।

वैदिक साहित्य से जुडे सभी ग्रंथो का प्रतिपाद्य विषय मूल्य है जो विविध देवताओं की स्तुति, आत्मा एवं ब्रहम के स्वरूप तथा संबंध को उजागर करने के दरमीयान प्रगट होते हैं। इन सभी ग्रंथों में उपनिषद मानवीय जीवन एवं तत् संबंधित मूल्यों की शिक्षा को प्रतिपादित करने के अनुंसंधान बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। प्रस्तुत प्रपत्र में मूल्य के संप्रत्त्यय की स्पष्टता के साथ उपनिषद साहित्य का संक्षिप्त परिचय देते हुए उपनिषदों में ध्वनित होने वाले मानवीय मूल्यों की शिक्षा एवं वर्तमान समय में उनकी उपादेयता की विवेचना की गयी है।

मूल्य

मूल्य शब्द का शब्दकोशीय अर्थ है किमत, महत्त्व या श्रेष्ठता। मूल्य किसी वस्तु, स्थान, क्रिया अथवा विचार के महत्त्व को दर्शाता है, साथ ही, इसका लक्ष्य यह निर्धारित करना होता है कि कौन से कार्य करने के लिए श्रेष्ठ हैं, जीवन का कौन सा तरीका श्रेष्ठ है, अथवा विभिन्न क्रियाओं की महत्ता को वर्णित करना होता है (विकीपीडिया,2018)।

मूल्य एक अमूर्त संप्रत्यय है जिसमें किसी व्यक्ति, गुण, स्थान, विचार अथवा क्रिया के महत्त्व, किमत, श्रेष्ठ अथवा वांछनीयता का विचार निहित रहता है। जिसकी उपस्थिति एवं अनुपस्थिति सुख, दुःख, गौरव अथवा संतोष की अनुभूति कराती है। निष्कर्षरूप से मूल्य को मानव जीवन से संबंधित उस अपरिहार्य घटक के रूप में देख सकते हैं जिनकी प्राप्ति मानव की गरिमा एवं अस्तित्व के लिए जरूरी है। या, यूं कहें, मानव इन मूल्यो के कारण प्राणि जगत में सर्वोच्च स्थान पर स्थापित है। मूल्य के संप्रत्यय को व्याख्यायित करे हुए अहमद(2008, पृ. 530) लिखते हैं कि मूल्य समाज द्वारा प्रस्थापित वे विचार हैं जो बताते हैं कि मानव जीवन के लिए क्या वांछनीय है, क्या अच्छा है, अथवा क्या महत्त्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में समाज द्वारा स्वीकृत मानव जीवन यापन के वे उद्देश्य अथवा मापदंड जिनकी प्राप्ति के लिए मानव सतत प्रयत्नशील रहता है, तथा जिसकी प्राप्ति मानव को सुख, शांति एवं संतोष प्रदान करती है। मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत उन ईच्छाओं एवं लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किये जा सकते हैं जिन्हे अनुबंध, अधिगम अथवा सामाजिकरण की प्रक्रिया द्वारा प्राप्त किया जाता है और जो स्वतः अनुकरणीय, सम्मान

दिलाने वाले एवं वांछनीयता का रूप धारण कर लेते हैं राधा कमल मुखर्जी (लाल, 2002, पृ. 525 द्वारा उल्लिखित)।

उपरोक्त परिभाषाओं एवं विवेचन के आधार पर मूल्य की अग्रलिखित विवेषताएं सूचिबद्ध की जा सकती हैं-

1. मूल्य एक अमूर्त संकल्पना है।
2. मूल्य मानव समूह द्वारा स्वतः स्वीकृत नैतिक नियम, विश्वास, सिद्धांत, आदर्श, एवं व्यावहारिक मापदंड हैं।
3. मूल्य मानव के दीर्घावधि के अनुभव के परिणाम हैं।
4. मूल्यों के विकास में स्थान विशेष की भौगोलिक परिस्थिति, सांस्कृतिक विरासत एवं वातावरण जन्य घटनाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है।
5. मूल्य के पालन से सुख, शांति एवं संतोष की प्राप्ति होती है।
6. मूल्य मानव की पसंदगी, महत्त्व एवं भौगोलिक परिस्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं। इसमें कुछ मूल्य शाश्वत एवं कुछ मूल्य समय के अनुसार बदलते रहते हैं जैसे सत्य, शांति, न्याय, बन्धुत्व, अस्तेय, अपरिग्रह जैसे मूल्य शाश्वत हैं जिनका महत्त्व प्रत्येक काल एवं परिस्थिति में समान रहा है तथा जिसकी स्थापना के लिए मानव ने अनेको संघर्ष भी किये हैं।

इस प्रकार हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि मानवीय मूल्य मानव समूह द्वारा विकसित, स्वीकृत एवं महत्त्व दिये गये वे विचार हैं जिनके पालन को शांत, समृद्ध एवं संतोषपूर्ण जीवन यापन के लिए आवश्यक माना गया है।

उपनिषद साहित्य

सामान्य शब्दों में किसी भाषा में लिखे गये शास्त्रसमूह को साहित्य कहा जा सकता है। साहित्य शब्द को परिभाषित करते हुए लिखा गया है, 'सहितस्य भावः साहित्यः', अर्थात शब्द और अर्थ का सहभाव ही साहित्य है(त्रिपाठी,1996, पृ. 5)। आचार्य भामह ने भी साहित्य जिसे काव्य के नामाविधान से भी संबोधित किया जाता है को परिभाषित करते हुए लिखा है 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'। यहाँ सहित शब्द के दो अर्थ हैं; सहित=साथ होना और स+हित= हित के साथ होना अर्थात जिससे इस चराचर जगत के हित की रक्षा की जा सके वहीं साहित्य है। संपूर्ण उपनिषद साहित्य मूल्यो की प्रस्थापना एवं चराचर जगत के हित की रक्षा के लिए ही लिखा गया है इसमें दो मत नही हो सकते हैं।

उपनिषद का सामान्य अर्थ होता है गुरू के समीप बैठकर ज्ञान प्राप्त करना। अपने व्युत्पत्ति मूलक अर्थ में उपनिषद शब्द 'उप' एवं 'नि' उपसर्गों के साथ 'सद्' धातु के साथ 'क्विप्' प्रत्यय के प्रयोग से बना है। सद् धातु के तीन अर्थ मान्य है;1) विशरण(विनाश); 2) गति (ज्ञान की प्राप्ति); और 3) अवसादन(शिथिल करना)। अपने इस अर्थ में उपनिषद का तात्पर्य है जो पाप-ताप का नाश करे, सच्चा ज्ञान प्रदान करे एवं अज्ञान को दूर कर सांसारिक बंधन को शिथिल करे वह शास्त्र उपनिषद है।

उपनिषद ऋषियों की दार्शनिक चिन्तन प्रधान रचनाएँ हैं जिसमें इहलोक, परलोक तथा समाज के साथ मनुष्य के संबंधों का मार्मिक एवं तार्किक विवरण प्रस्तुत किया गया है। उपनिषद की भाषा सहज एवं सरल है, ये गद्य एवं पद्य दोनों स्वरूपों में लिखे गये हैं। जहां ईश, कठ, एवं केन पद्य प्रधान हैं वहीं छांदोग्य, तैत्तरिय, एवं बृहदारणयकोपनिषद गद्य प्रधान हैं। इन दोनों स्वरूपों में प्राप्त ग्रंथो का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय समान है तथा इनकी भाषा शैली एवं प्रवाह समानरूप से सरल, ध्वन्यात्मक एवं सहज हैं।

उपनिषद अपने आसपास के दृश्य संसार के पीछे झाँकने के प्रयत्न हैं। इसके लिए न कोई उपकरण उपलब्ध हैं और न किसी प्रकार की प्रयोग-अनुसंधान सुविधाएँ संभव है। अपनी मनश्चेतना, मानसिक अनुभूति या अंतर्दृष्टि के आधार पर हुए आध्यात्मिक स्फुरण या दिव्य प्रकाश को ही वर्णन का आधार बनाया गया है। उपनिषद अध्यात्मविद्या के विविध अध्याय हैं इनमें विश्व की परमसत्ता के स्वरूप, उसके साथ व्यक्ति, समाज एवं आत्मा के संबंध, विभिन्न प्राकृतिक शक्तियों के साथ उसके संबंध, एवं मानवीय स्वभाव का विवेचन तो प्रस्तुत किया ही गया है, परन्तु इनका मुख्य प्रतिपाद्य विषय तो मूल्य हैं।

उपनिषद साहित्य वैदिक साहित्य की श्रृंखला का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। वैदिक साहित्य में में वेद, ब्राह्मण, अरणयक एवं उपनिषदों का क्रमशः समावेश होता है। उपनिषद वैदिक साहित्य के अंतिम ग्रंथ माने जाते हैं। इनकी संख्या के विषय में मतमातन्तर है। शर्मा (2005, पृ.12) ने उपनिषदों की कुल संख्या 220 बतायी है। वही मुक्तिकोपनिषद के अनुसार कुल उपनिषदों की संख्या 108 है जिसमें 10 उपनिषद ऋग्वेद के साथ, 19 शुक्ल यजुर्वेद के साथ, 32 कृष्ण यजुर्वेद के साथ, 16 सामवेद के साथ, एवं 31 अथर्ववेद के साथ संबंधित हैं(रावल,2000, पृ.84)। शंकराचार्य ने महत्त्वपूर्ण 11 उपनिषदों पर भाष्य लिखें है। इनमें ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माडूक्य, तैतरिय, एतरेय, छांदोग्य, बृहदारण्यक, तथा श्वेताश्वतरोनिषद सामिल हैं।

उपनिषद साहित्य की परंपरा अत्यन्त विशाल है। प्रस्तुत प्रपत्र में इन्ही 11 उपनिषदों तथा उनसे संबंधित भाष्य एवं लेखों के आधार पर मूल्य शिक्षा की पड़ताल की गयी है।

उपनिषद साहित्य में मूल्य शिक्षा

उपनिषद भारतीय दर्शन की वह विचारधारा है जो इस ब्रह्माण्ड को ब्रह्म(परम सत्ता) द्वारा ब्रह्म से निर्मित मानती है। यह ब्रह्म और जीवात्मा को एक मानती है और प्रतिपादित करती है कि मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य आत्मानुभूति है जो ज्ञान, निष्काम कर्म एवं योगसाधना द्वारा प्राप्त की जा सकती है (रावल,2002, पृ.83)। इस आत्मानुभूति के संदर्भ में जो मार्ग उपनिषदों मे दिखाये जाते हैं वे मूल्य प्रधान हैं। जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक शॉपेनहार ने उपपनिषदों में निहित मूल्यो की बात करते हुए कहा है कि संपूर्ण संसार में किसी ग्रंथ का अध्ययन उतना कल्याणकारी एवं शांतिदायक नही नहीं है जितना उपनिषदों का(दत्ता एवं चटर्जी,2010, पृ. 326)। उपनिषद में वर्णित मूल्यों को प्रेय एवं श्रेय के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

प्रेय मूल्य से तात्पर्य उन मूल्यो से है जो मानव के शारीरिक विकास तथा इन्द्रिय सुख सुविधाओं के लिए आवश्यक हैं इन मूल्यों में धन-संम्पदा, परिवार, पशुधन, भूमि, वाहन, अन्न, जल, वायु इत्यादि का समावेश होता है। श्रेय के अंतर्गत उन मानवीय मूल्यों का समावेश किया गया है जो व्यक्ति के आत्मिक विकास के साथ जुडे हैं जिनमें जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य आत्मानुभूति को माना गया है। उपनिषदों में वर्णित कुछ मूल्यों को शाश्वत एवं सार्वकालिक माना गया है। इन मूल्यों की प्राप्ति के संदर्भ में अन्य क्षेत्र के मूल्य साधन स्वरूप हीं है।

उपनिषदों का प्रमुख उद्देश्य मानव समुदाय को आत्मानुभूति की ओर प्रेरित करना है जिससे मानव समाज में संयमित एवं मूल्यनिष्ठ जीवन यापन करते हुए आत्मसुख एवं संतोष की प्राप्ति की शिक्षा दी जा सके। अमृतोपनिषद के श्लोक संख्या 28 के अनुसार-

'भयं क्रोधमथालस्यमतिस्वप्रातिजागरम्।
अत्याहारमनाहारं नित्यं योगी विवर्जयेत।।(28)'

सुखमय जीवन की प्राप्ति के मार्ग में अज्ञान, मोह, मद, भय, आलस्य एवं जीवन की अत्यंतिकता को प्रमुख बाधक मानते हुए कहा गया है कि मनुष्य ज्ञान की प्राप्ति कर सुखमय जीवन तभी जी सकता है यदि वह उपरोक्त बंधनो से मुक्त हो (शर्माएवं शर्मा 2005, पृ.32)।

ईशोपनिषद में समता के मूल्य की शिक्षा प्रदान करते हुए कहा गया-
'यस्तु सर्वाणी भूतान्यात्मन्येववानुपश्यति। सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते'।।(6) अर्थात जड़ एवं चेतन सभी में एक ही आत्मतत्त्व की उपस्थित है सृष्टि के सभी तत्त्व उसी परम पिता की देन हैं। इस प्रकार की विचारधारा से युक्त व्यक्ति कभी दुःखी नही होता है एवं सामानजस्यपूर्ण जीवन जीता है।-

कठोपनिषद एवं ईशावास्योपनिषद सहित सभी उपनिषदों में ज्ञान को एक महत्पूर्ण मूल्य माना गया है। अज्ञान को विविध प्रकार के दुःखों का मूल कारण माना गया है। कठोपनिषद (द्वितीय वल्ली, श्लोक 3, 4 एवं 5) में अविद्या को भौतिक जगत संबंधित ज्ञान एवं विद्या को आध्यात्मिक जगत संबंधित ज्ञान के रूप में वर्णित किया गया है। यद्यपि ईशावास्योपनिषद दोनो ही प्रकार के ज्ञान की को महत्त्वपूर्ण मानता है परन्तु विद्या को सुख शांति एवं संतोषपूर्ण जीवन यापन एवं आत्मानुभूति का कारण मानते हुए कहा गया है-

'विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्वा विद्यामृतमश्नुते।।'(ईशोपनिषद,11)।

अनुशासन, स्वाध्याय, एवं नियमित अभ्यास जैसे मूल्यो को ज्ञान प्राप्ति का मार्ग बताया गया है(अमृतोपनिषद, 29)। ईशावास्योपनिषद के पहले ही मंत्र में 'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चजगतत्यांजगत्।तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्' के माध्यम से त्याग एवं संयम को मानव जीवन का सर्वोच्च मूल्य मानने की शिक्षा दी गयी है।वर्तमान उपभोगवादी संस्कृति में त्यागपूर्ण जीवन को मानव अस्तित्व के लिए महत्तवपूर्ण मूल्य माना जा सकता है।

उद्यम (परिश्रम), निष्काम कर्म एवं चर-अचर सभी के प्रति समभाव को जीवन निर्वाह का उत्तम मार्ग मान गया है(ईशावास्योपनिषद, 2, 6)। पंचमहाभूत और उसके संम्मिलन से उत्पन्न इस ज़ड़ एवं चेतन जगत के साथ एक्य भाव की अनुभूति पर्यावरणीय संरक्षण की प्रदान करने में मददरूप है। इन्द्रिय निग्रह, बुद्धिमत्ता, एवं विवेक जैसे मूल्यों को जीवन निर्वाह के लिए उपयोगी माना गया है (कठोपनिषद, 6, तृ.वल्ली)। 'उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत...(13, तृ.वल्ली)' के माध्यम से पुरूषार्थ के मूल्य का प्रतिपादन कठोपनिषद की देन है जो स्वामी विवेकानन्द का ध्येय मंत्र भी है।

वही 'नवित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः....(कठो.27, प्रथम वल्ली)' जैसे मंत्र के माध्यम से उपभोक्तावादी संस्कृति की अवहेलना एवं सरलता, सादगी, तथा ज्ञान के विविध रूपों (संज्ञानं=सत् का ज्ञान, आज्ञानं= आदेश देने की शक्ति का ज्ञान, विज्ञानं=विशिष्ट ज्ञान, प्रज्ञानं=विवेक पूर्ण निर्णय की क्षमता) की प्राप्ति को अधिक अभिष्ट मूल्यवान बताता है।

छांदोग्योपनिषद में ऋर्षि गौतम ने सत्यकाम को उनकी सत्यनिष्ठा के कारण शिष्य रूप में स्वीकार किया था। सत्यकाम की निष्ठा, दृढ निश्चय, एवं सेवा के परिणामस्वरूप ज्ञान की प्राप्ति का कथानक इस संसार को सत्य, निष्ठा, श्रद्धा, अनुशासन, सेवा, त्याग एवं सदाचरण जैसे अनेक व्यावहारिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करता है जो वर्तमान समय में अत्यन्त व्यावहारिक एवं उपादेय हैं।

तैत्तिरीयोपनिषद, के नवम् अनुवाक में ऋतं च स्वाध्यायप्रवचनेन च। सत्यं च स्वाध्यायप्रवचनेन च...। के माध्यम से सत्य आचरण, स्वाध्याय, तप इत्यादि मूल्यों को मानवीय जीवन के लिए उपयोगी बताया गया है।

तैत्तिरीयोपनिषद के इग्यारहवें अनुवाग में समावर्तम संस्कार के समय आचार्य द्वारा शिष्यो को दिया गया उपदेश अत्यंत जीवनोपयोगी तथा समाजोपयोगी मूल्यों से युक्त है। आचार्य शिष्यों को सत्य, धर्माचरण, स्वाध्ययाय, दान, कुशल गृहस्थ जीवन, कर्मठता, आथित्य सत्कार, उत्तम चरित्र, सामाजिक नियमो का पालन, परामर्श, निर्मलता, तप, निर्दिष्ट कर्म का आचरण, तथा सद्व्यवहार इत्यादि मूल्यों के आधार पर जीवन निर्वाह की शिक्षा देते हैं।

बृहदारण्यकोपनिषद के नवमें ब्राह्मण के 28वे पाद में वृक्ष एवं मानव शरीर का बडा ही मार्मिक वर्णन प्रस्तुत किया गया है जिसमें ऋषियों के संशय का उत्तर देते हुए 'य़था वृक्षो वनस्पतिस्तथैव पुरूषोऽमृषा।' के माध्यम से याज्ञवल्क ऋषि ने मानव एवं वनस्पति की समानता का तार्किक, वैज्ञानिक एवं तुलनात्मक वर्णन प्रस्तुत किया है जिससे पर्यावरण के प्रति प्रेम एवं संरक्षण के मूल्य स्वतः सीखे जा सकते हैं। बृहदारण्यकोपनिषद के पंचम अध्याय के द्वितीय खंड में प्रजापति से, उनके तीनो पुत्र क्रमशः देव, मानव एवं असुर, इन्द्रिय दमन, दान एवं दया की शिक्षा ग्रहण करते हैं जो वर्तमान समय में अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानवीय मूल्य हैं।

मुण्डकोपनिषद के प्रथम मुंण्डक के द्वितीय खंड के पहले पाद में 'तान्याचरत नियतं सत्यकामा एष वः पन्थः सुकृतस्य लोके' के रूप में इस संसार में श्रेष्ठ कर्म करने के मूल्य का प्रतिपादन किया गया है। मुण्डकोपनिषद तप, साधना, सत्याचरण श्रद्धा, अपरिग्रह तथा पूर्ण संतोष को आध्यात्म के परम मूल्य मोक्ष प्राप्ति का मार्ग मानता है(श्लोक सं.11, द्वितीय खंड)। 'सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विवतो देवयानः।येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकाम यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम्।।'(मुण्डकोपनिषद, तृ.मुं. प्र.खं.6) के माध्यम से सत्य के मूल्य को प्रतिष्ठित करते हुए कहा गया है कि सत्य की विजय होती है झूठ की नही।

उपसंहार

संसार के सभी चर-अचर के कल्याण के लिए लिखे गये उपनिषद का अध्ययन एवं उसके विचारों का प्रसार-प्रचार समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है। शिवसंकल्पोपनिषद के प्रत्येक श्लोक के अंत में 'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।' के माध्यय से ऋषि यहीं कामना करते हैं कि हमारा मन श्रेष्ठ कल्याणकारी विचारों से युकत् हो। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, तप, दान, दया, आथित्य सत्कार, निष्काम कर्म, त्याग, समभाव, प्रेम, करूणा, धार्माचरण तथा सदाचरण ईत्यादि मूल्यो सें युक्त उपनिषद न केवल मानव काल्याण का साधन है अपितु इसका अध्ययन-अध्य़ापन सम्पूर्ण सृष्टि के संरक्षण को भी सुनिश्चित करता है। भौतिक विकास जैसे एकांगी विकास की ओर उन्मुख वर्तमान मानव जाति प्रतिस्पर्धा, लालच, इन्द्रिय सुख, मोह, हिंसा, में रत हो अपनी सुख, शांति एवँ सन्तोषपूर्ण जीवन से कोशो दूर जा चुकी है। ऐसे में वह उपनिषद ही हैं जो हमें 'सह देवः स नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु (श्वेताशवतरोपनिषद, चतुर्थ अध्याय,1)' अर्थात वह देव हम सवको शुभ बुद्धि से संयुकत् करें का पाठ पढ़ा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ

I. त्रिपाठी, आर.एस.(1996). संस्कृत साहित्य का प्रामाणिक इतिहास.वाराणसीःकृष्णदास अकादमी.

II. रावल,आर, बी.(2011). केळवणीनी तात्विक अने समाजशास्त्रीय आधारशिलाओ. अमदावादः नीरव प्रकाशन.

III. लाल, आर.एल.(2002). शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजशास्त्रीय सिद्धांत. मेरठःरस्तोगी एवं रस्तोगी पब्लिकेशन.

IV. विकीपीडियाः एक मुक्त ज्ञान कोश (2018) मूल्य(नीतिशास्त्र). https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A5%82%E0%A4%B2%E0%A5%8D%E0%A4%AF_(%E0%A4%A8%E0%A5%80%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A4%BE%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0)

V. शर्मा, एस,आर एवं शर्मा,बी,डी (2005) (संपादक). 108 उपनिषदः ज्ञानखंड. मथुराः युग निर्माण योजना.

****

डॉ. महेश नारायण दीक्षित
सह प्राध्यापक
शिक्षणशास्त्र विभाग
शिक्षण विद्याशाखा
गूजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद

Copyright © 2012 - 2019 KCG. All Rights Reserved. | Powered By: Knowledge Consortium of Gujarat